छयालीस सुगुण को घेरें अरिहंत जिनेशा। सब दोष अठारह से रहित त्रिजग महेशा।
ये घातिया को घात के परमात्मा हुए। सर्वज्ञ वीतराग औं निर्दोष गुरु हुए।।३।।
जो अष्ट कर्म नाश के ही सिद्ध हुए हैं। वे अष्ट गुणों से सदा विशिष्ट हुए हैं।
लोकाग्र में हैं राजते वे सिद्ध अनन्ता। सवार्थ सिद्धि देते हैं वे सिद्ध महन्ता।।४।।
छत्तीस गुण को धारते आचार्य हमारे। चउ संघ के नायक हमें भवसिन्धु से तारें।
पच्चीस गुणों युक्त उपाध्याय कहाते। भव्यों को मोक्षमार्ग का उपदेश पढ़ाते।।५।।
जो साधु अट्ठाईस मूल गुण को धारते। वे आत्म साधना से साधु नाम धारते।
ये पंचपरम देव भूत काल में हुए। होते हैं वर्तमान में भी पंचगुरु ये।।६।।
होंगे भविष्य काल में भी सुगुरु अनन्ते। ये तीन लोक तीन काल के हैं अनन्ते।
इन सब अनन्तानन्त की मैं वन्दना करूं। शिवपथ के विघ्न पर्वतों की खण्डना करूं।।७।।
इक और तराजू पे अखिल गुण को चढ़ाऊं । इक और महामंत्र अक्षरों को धराऊं ।
इस मंत्र के पलड़े को उठा न सके कोई। महिमा अनन्त यह धरे ना इस सदृश कोई।।८।।
इस मंत्र के प्रभाव श्वान देव हो गया। इस मंत्र के अनन्त का उद्धार हो गया।
इस मंत्र की महिमा को कोई गा नहीं सके। इसमें अनन्त शक्ति, पार पा नहीं सके।।९।।
पाँचो पदों से युक्त मंत्र सार भूत हैं। पैतीस अक्षरों से मंत्र परमपूत है।।
पैंतीस अक्षरो के जो पैंतीस व्रत करें। उपवास या एकाशना में सौख्य को भरें।।१०।।
तिथि सप्तमी के सात पंचमी के पांच हैं। चौदश के चौदह नवमी के भी नव विख्यात हैं।
इस विधि से महामंत्र की आराधना करें। वे मुक्ति वल्लभ पति निज कामना वरें।।११।।

दोहा:- यह विष को अमृत करें, भव-भव पाप विदूर।
पूर्ण ''ज्ञानमति'' हेतु मै, जजूं भरो सुख पूर।।१२।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधन पंचनमस्कारमंत्राय जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा:- मंत्रराज सुखकार, आतम अनुभव देत है।
जो पूजे रुचिधार स्वर्ग मोक्ष के सुख लहें।।१३।।

इत्याशीर्वादः । शांतिधारा, परिपुष्पांजलिः।

श्री णमोकार-चालीसा

बंदू श्री अरिहंत पद, सिद्ध नाम सुखकार,
सूरीश्रावक साधुगण हैं, जग के आधार।।१।।
इन पाँचो परमेष्ठि से, सहित मूल यह मंत्र,
अपराजित व अनादि हैं, णमोकार शुभ मंत्र।।२।।
णमोकार महामंत्र को, नमन करूं शतबार,
चालीसा पढ़कर लहूं, स्वात्मधाम साकार।।३।।

चौपाईः हो जैवन्त अनादिमंत्रम्, णमोकार अपराजित मंत्रम्।।१।।
पंच पदों से युक्त संयत्रम्, सबमनोरथ सिद्धि सुतंत्रम्।।२।।
पैतीस अक्षर माने इसमें, अठ्ठावन मात्राएं भी हैं।।३।।
अतिशयकारी मंत्र जगत में, सब मंगल में कहा प्रथम हैं।।४।।
जिसने इसका ध्यान लगाया, मन मंदिर में इसे बिठाया।।५।।
उसका बेड़ा पार हो गया, भवदधि से उद्धार हो गया।।६।।
अंजन बना निरंजन क्षण में, शूली बदली सिंहासन में।।७।।
नाग बना फूलों की माला, हो गयी शीतल अग्नि ज्वाला।।८।।
जीवन्धर से इसी मंत्र को, सुना श्वान ने मरणासन्न हो।।९।।
शांतभाव से काया तजकर, गया स्वर्ग यक्षेन्द्र बना तब।।१०।।
एक बैल ने मंत्र सुना था, राजघराने में जन्मा था।।११।।
जातिस्मरण हुआ जब उसको, उसने खोजा उपकारी को।।१२।।
पदमरुची को गले लगाया, आगे मैत्री भाव निभाया।।१३।।
कालान्तर में वही पद्मरुचि, राम बने तब बहुत धर्मरुचि।।१४।।
बैल बना सुग्रीव बन्धुवर, दोनों के सम्बन्ध मित्रवर।।१५।।
रामायण की सत्य कथा हैं, णमोकार से मिटी व्यथा हैं।।१६।।
ऐसी ही कितनी घटनाएँ, नये पुराने ग्रन्थ बताएँ।।१७।।
इसीलिए इस मंत्र की महिमा, कहीं सभी ने इसकी गरिमा।।१८।।
हो अपवित्र पवित्र दशा में, सदा करें संस्मरण हृदय में।।१९।।
जपें शुद्ध तन से जो माला, वे पाते हैं सौख्य निराला।।२०।।
अन्तर्मन पावन होता हैं, बाहर का अघमन धोता हैं।।२१।।
णमोकार के पैंतीस व्रत है, श्रावक करते श्रद्धायुत है।।२२।।
हर घर के दरवाजे पर तुम, महामंत्र को लिखो जैनगण।।२३।।
जैनी संस्कृति दर्शाएगा, सुख समृद्धि भी दिलवाएगा।।२४।।
एक तराजू के पलड़े पर, सारे गुण भी रख देने पर।।२५।।
दूजा पलड़ा मंत्र सहित जो, उठा न पाए कोई उसको।।२६।।
उठते चलते सभी क्षणों में, जंगल पर्वत या महलों में।।२७।।
महामंत्र को कभी न छोड़ो, सदा इसी से नाता जोड़ो।।२८।।
देखो ! इक सुभौम चक्री था, उसने मन में इसे जपा था।।२९।।
देव मार नही पाया उनको, तब छल युक्ति बताई नृप को।।३०।।
उसके चंगुल में फंस करके, लिखा मंत्र राजा ने जल में।।३१।।
ज्यों ही उस पर कदम रख दिया देव की शक्ति प्रगट कर दिया।।३२।।
देव ने उसको मार गिराया, नरक धरा को नृप ने पाया।।३३।।

मंत्र का यह अपमान कथानक, सचमुच ही हैं हृदय विदारक ।।३४।।
भावों से भी कभी न करना, सदा मंत्र पर श्रद्धा करना ।।३५।।
इसके लेखन में भी फल हैं, हाथ-नेत्र को जाए सफल है ।।३६।।
णमोकार की बैंक खुली हैं, ज्ञानमती प्रेरणा मिला हैं ।।३७।।
जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में, मंत्रों का व्यापक संग्रह है ।।३८।।
इसकी किरण प्रभा से जग में फैले सुख शान्ति जन जन में ।।३९।।
मन वच तन से इसे नमन हैं, महामंत्र का करूं स्मरण मै ।।४०।।

शुभ छन्दः- यह महामंत्र का चालीसा, जो चालीस दिन तक पढ़ते है।
ॐ अथवा असिआउसा मंत्र या पूर्ण मंत्र जो जपते है।।
ॐ कारमयी दिव्यध्वनि के वे इक दिन स्वामी बनते है।।
परमेष्ठि पद को पाकर वे खुद णमोकार मय बनते है।। १ ।।

पच्चीस सौ बाईस वीर शब्द आश्विन शुक्ला एकम तिथि में।
रच दिया ज्ञानमति गणिनी की शिष्या ''चन्दनामती'' जी ने।।
मैं भी परमेष्ठि पद पाऊँ, प्रभू कब ऐसा दिन आयगा।।
जब तेरा मन अन्तर्मन में, रमकर पावन बन जाएगा।। २ ।।

श्री णमोकार मन्त्र महात्म्य-हिन्दी

प्रबल कर्म धन राशि मिटाता, भव पर्वत को वज्र समान,
स्वर्ण मुक्ति पर ले जाने में नेता जो निर्विघ्न प्रधान।
अंधकूपसम राग मोह में पतित जनों को कर अवलम्ब,
सर्व-चराचर का संजीवन मंत्रराज हैं रक्षास्तम्भ ।।१।।

एक तरफ तो तीन लोक हो मन्त्रराज हो दूजी ओर,
रखकर यदि कोई तौले तो मन्त्रराज भारी ले ठौर।
पंच परमगुरु नमनरूप इस महामन्त्र की जो महिमा,
उसको नहीं कह सकता कोई चाहे जितनी मति गरिमा ।।२।।

काल अनन्त बीते पहले फिर आगे भी बीतेंगे,
उनमें शाश्वत रहा मन्त्र यह, गाई महिमा गावेंगे।
नहीं आदि हैं नहीं अन्त हैं मन्त्र अनादि निधन यह ही,
इस को जपता हैं जो प्राणी शविपद पाता है वह ही ।।३।।

चलते उठते गिरते पड़ते और जागते या सोते,
न्हाते धोते धरा पीठ पर चाहे लोट-पोट होते।